

International Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

International Advisory Board

Kamani Perera Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka	Mohammad Hailat Dept. of Mathematical Sciences, University of South Carolina Aiken	Hasan Baktir English Language and Literature Department, Kayseri
Janaki Sinnasamy Librarian, University of Malaya	Abdullah Sabbagh Engineering Studies, Sydney	Ghayoor Abbas Chotana Dept of Chemistry, Lahore University of Management Sciences[PK]
Romona Mihaila Spiru Haret University, Romania	Ecaterina Patrascu Spiru Haret University, Bucharest	Anna Maria Constantinovici AL. I. Cuza University, Romania
Delia Serbescu Spiru Haret University, Bucharest, Romania	Loredana Bosca Spiru Haret University, Romania	Ilie Pinteau, Spiru Haret University, Romania
Anurag Misra DBS College, Kanpur	Fabricio Moraes de Almeida Federal University of Rondonia, Brazil	Xiaohua Yang PhD, USA
Titus PopPhD, Partium Christian University, Oradea, Romania	George - Calin SERITAN Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences Al. I. Cuza University, Iasi	More

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur	Iresh Swami N.S. Dhaygude Ex. Prin. Dayanand College, Solapur	Rajendra Shendge Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur
R. R. Patil Head Geology Department Solapur University, Solapur	Narendra Kadu Jt. Director Higher Education, Pune	R. R. Yaliker Director Managment Institute, Solapur
Rama Bhosale Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel	K. M. Bhandarkar Praful Patel College of Education, Gondia	Umesh Rajderkar Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik
Salve R. N. Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur	Sonal Singh Vikram University, Ujjain	S. R. Pandya Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai
Govind P. Shinde Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai	G. P. Patankar S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka	Alka Darshan Shrivastava Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar
Chakane Sanjay Dnyaneshwar Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune	Maj. S. Bakhtiar Choudhary Director, Hyderabad AP India.	Rahul Shriram Sudke Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore
Awadhesh Kumar Shirotriya Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)	S. Parvathi Devi Ph.D.-University of Allahabad	S. KANNAN Annamalai University, TN
	Sonal Singh, Vikram University, Ujjain	Satish Kumar Kalhotra Maulana Azad National Urdu University



हरियाणावी मध्य कालीन संत साहित्य के दादू पंथ में आध्यात्मिक चिंतन

डॉ. भागीरथ

एसिसटेंट प्रोफेसर हिंदी, चौ.देवी लाल विश्वविद्यालय, सिरसा।

प्रस्तावना –

हरियाणा के संत साहित्य में हरियाणा के दादू पंथ का विशेष महत्व है दादूपंथी साधुओं को अनेक देश स्थान, वेशभूषा, रहन, सहन, जीवनयापन, उपदेश आदेश प्रचार-प्रसार के ढंगों में विभिन्नता रखने के कारण, उन्हीं विभिन्नताओं के आधार पर छः मुख्य वर्गों में विभक्त किया गया है- यथा खालसा विरक्त, दखनाथा स्थानधारी, उतराथा स्थानधारी, नागा और तपसी^१ इनके शिष्यों में बाबा बनवारी दास, संत हरिदास प्रसिद्ध है। वैसे तो इनकी शिष्य परंपरा अत्यधिक समृद्ध है। इनके शिष्यों का वर्णन गद्दियों समेत निम्नवत है:-

केवलदास-रानीला, कनीराम-बुवाणी, हरनाम दास-भिवानी, कल्याण दास-माणकरवास, भागोत दास-गागड़वास, अटलराम-सौभर, मनोहर दास-गूढ़, सहजराज-झज्जर, हे तम दास-तालाब, कांशीराम-धागड़, धर्मदास-रमतेराम, मालूकदास-उदे शमसर, दयाराम जी-रामतेराय, परशुराम-मोखरा, मानदास-हरना (?), नेतराम-पीपलोदा, छतूयोहडड़ा, आत्माराम-भैणी, नंदरामजी-कलानौर, चेताराम-बौद्ध, सारंगदास-कहानौर, चरण दास-दूबलधन।

हरिदास जी की रामलीला गद्दी की शिष्य परंपरा इस प्रकार है- हरिदास जी, केवलदास जी, बाबा बिसनदास, हजारीराम बुद्धराय, गुमानदास, मोटराम तथा रामदास।



संत हरिदास की बाणी में साधना संबंधी संकेत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसी आधार पर हरियाणावी दादूपंथी संतों की साधना का स्वरूप तथा हुआ है। एक स्थान पर हरिदास जी कहते हैं कि-सुरति सुहागन प्रसन्न होकर मंगलराग गा रही है, उसको सतगुरु ने शब्द बतला दिया है और इस विधि से इसी जन्म में प्रिय का साक्षात्कार संभव हो गया है^२ सतगुरु ने सुरति का शब्द से मेल करवा दिया। इस सुरति-शब्द साधना में सुरति, मन तथा पवन (प्राण) सभी को एक कर त्रिकुटी में ध्यान लगाना पड़ता है। इस ओर संकेत करते हुए हरिदास का कहना है कि मन, पवन तथा सुरति एक होकर तट पर भूल रहे हैं। ५ तत्व २५ प्रकृति स्थित हो गए हैं आध्यात्मिक वाणियां निम्नवत हैं:-

गुरु महिमा:-

गोबिंद बैठा गोप हुय, ज्यों कूवे में नीर।

गुरु डोरी बिन हरिदास, जल पीवै नहीं बीर।^३

(हरिदास)

यह विचार सागर कियो, जायें

रत्न अनेक।

गोप्य वेद सिद्धांत तै लहत सविवेक।^४

(निश्चलदास)

मेरी माई री अपनो पतिव्रत कीजै।।

कंवल नइन के गुण किन गावै, जब लग जग में जीजै।।^५

(हरदास)

दादू पंथ में संध्या बदन के दादू जी की 'पंथ' आरती का गायन एक नियम है। आरती का एक इस प्रकार है:-

इहि विधि आरती राम की कीजै।

आत्मा अंतर वारणा लीजै।।

तनम न चंदन प्रेम की माला।

अनहद घंटा दीन दयाला

ज्ञान का दीपक पवन की बाती।

देव निरंजन पांचों पाती आनंद

मंगल भाव की सेवा।।

मनसा मंदिर आत्म देवा भक्ति

निरंतर मैं बलिहारी।

दादू न जाने सेवा तुम्हारी^६

संपूर्ण आरती में ऐसे ही ४ ओर पद हैं। दादूपंथी आपस में

मिलने पर सत्यराम से अभिवादन करते हैं। जिन्होंने जीव के गर्भ को छुआ व परमतत्व विवेचन कर उस तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त किया।

3.5.7 समता-पंथ में आध्यात्मिक चिंतन:

समता पंथ के जनक का नाम संत मंगतराम जी थे। यह पंथ निर्गुण संप्रदाय की आधुनिक कड़ियों में एक महत्वपूर्ण कड़ी है। 'श्री समता प्रकाश' ग्रंथ का गौरव-ग्रंथ है, जिसमें महाराज जी की पद्यबंध वाणी है। अपने साहित्य में उन्होंने परम पुरुष की प्रार्थना की है दूसरे अंग में 'समदर्शन योग' शीर्षक के अंतर्गत पांच मार्ग (अध्याय/प्रसंग) हैं। पहले मार्ग में 'सारतंतानाथ' के अंतर्गत संसार की उत्पत्ति, मुस्लमानी (उत्पत्ति) भेद, सतगुरु के लक्षण, बृहम की पहचान, गुरुमुख, मनमुख पर विचार, सतनाम की असलियत, सच्चा पेम, सत विश्वास यानी यकीने-पाक, सत्पुरुषार्थ यानी साची कौशश, सत विचार यानी साची सौच, निर्मानता या आजषी, पर उपकार यानी ने, अपनी वस्तु पर संतोष यानी हक शनासी, प्रेम, यानी लागरज मुहसबत, सादगी, सतसंगत तथा मोद की याद आदि पर विचार किया गया है। दूसरे मार्ग में 'अर्थ विज्ञान यात्रा अरमभते' तीसरे मार्ग 'योग चिंतामणि' के अंतर्गत योगद्वारा परमतत्व की प्राप्ति विभूत है। चौथे मार्ग में 'विवेक माला' में सतज्ञान विवेक का महत्व दिखाया गया है। पांचवें मार्ग 'सतसार प्रकाश' के अंतर्गत आत्म-रूप सत्य की

चर्चा है।⁹ तीसरा अंग का शीर्षक 'समता स्थित योग' चौथे 'चरजीव गोष्ठ' जिसमें आध्यात्मिक तत्व विवेचन किया गया है। पांचवा अंग 'शिवेतर परबत गोष्ठ' समता सार योग, सातवें 'विज्ञान योग' का वर्णन विश्लेषण है।

स्मृतत या समता तत्व मंगतराम जी की दृष्टि में परमतत्व सत्य अथवा परमतत्व का समशील है।¹⁰ उनका मत है कि सतमत का ज्ञान होने से द्वानंद की प्राप्ति होती है व यम की फांसी से मुक्ति मिल जाती है। समता योग से सब मैल कर जाते हैं, चेतन का चेतन के साथ मेल हो जाता है। समता ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। सारी सृष्टि का आरंभ तथा अंत समतात्व ही है।¹¹

समता पंथ की साधना पद्धति भी संतों की पारंपरिक पद्धति सुरत शब्द योग हैं। 'समता विलास' के अनुसार 'समता योग यानी सुरत शब्द की एकता' सिमरन योग का अभ्यास, 'शब्द प्राप्ति यानी ध्यान होगा' शब्द में स्थित होना, यही राजयोग हैं सहजयोग समता का नित नियम है। समता पंथ के पांच मुख्य नियम हैं-सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत सिमरन। उनके आध्यात्मिक चिंतन बिंदू विशेष उल्लेखनीय हैं।

नित ही शब्द समाध में, पुरती भई अडोल
मंगत मिटी सब वासना, सुन सतगुरु वचन अमोल।¹²

सुरति की अंतर्मुख करके नाम जपने तथा शब्द से प्रेम करने से अविगत ज्योति का प्रकट होने का विवेचन भी उपलब्ध होता ही यथा:

खैच के सुरती अंतर कीनी, नाम सिमरन की रसना लीनी।
उपरस जीवन धनी उदासी, आलख, शब्द संग प्रीति बिलासी।।
खेम कुशल तत्र प्रगट पाई, अवगत जोत निरंतर ध्याई।¹³

संत मंगतराम ने धर्म के स्वरूप का अवगाहन करने को श्रेष्ठ साधन बतलाया हैं धर्म की महिमा को निरूपित करते हुए वे कहते हैं:-

तन मन अपना दीजिए, साचे धर्म के माहि।
मंगत कहे पुकार के, बौहड़ गरम न पाई।¹⁴

समता पंथ का महामंत्र है:

ओइम ब्रह्म सत्यम, निरंकार अजनमा अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक कल्याण मूरत परमेश्वर शये नमस्त।¹⁵ यह मंत्र समता पंथ का मूल मंत्र गृह्य मंत्र तथा महामंत्र कहलाता है। इस मंत्र का महात्म्य शाश्वत है। स्वयं संत मंगतराम के शब्दों में:-

तिरयोदेश अक्षर मंत्र यह, सरब सिद्ध दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार।
महमा सत सरूप की, सब अक्षर पहचान।
चार वेद और सिमरती, सब का सार निधान।

समता पंथियों का अभिवहन शब्द 'ब्रह्म सत्यम' उनका ब्रह्म पूर्ण परमेश्वर है। वह अखंड, अवगत, निश्चयानी तत्व है, हव अजर-अमर, निरंकार, अजन्मा, अगोचर, ओंकार, मुरारी, प्रभु, परमात्मा, आनंद स्वरूप, विशम्भर, सरब अतीत, गोविंद, गुणातीत, सर्वव्यापक, अगम, अगाध, अध्यात्मक व सर्वेसर्वा सृष्टि का एक मात्र संचालनकर्ता है।

-
१. वही, पृ. १५५
 २. श्री हरिदास वाणी, पद १५०, पृ. ७५
 ३. वही, पद २४०, पृ. २२
 ४. निश्चल दास, विचार सागर, पृ. ३२७-३२८
 ५. हरदास की वाणी, राग धनाश्री के उदधृत
 ६. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य- पृ. १७४
 ७. सूरजभान, हरियाणा का संत-साहित्य, पृ. २५५
 ८. परमानंद, हंस चेतावनी, पृ. ५६
 ९. वही, पृ. १०
 १०. परमानंद, हंस चेतावनी, पृ. १०८
 ११. वही, पृ. १०६
 १२. वही, पृ. ११०
 १३. सूरजभान, हरियाणा का संत-साहित्य, पृ. २५३
 १४. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. २५४

Publish Research Article

International Level Multidisciplinary Research Journal

For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.aygrt.isrj.org